आधी आबादी की मजबूती से बदल रहे हैं गांव

गांव-समाज के विकास में महिलाओं की अहम भूमिका है. खुद की आर्थिक स्थिति सुधारने से लेकर गांव-समाज के विकास में ग्रामीण महिलाएं काफी सहयोग कर रही हैं. कल तक जो घर से बाहर कदम नहीं रखती थीं, वो आज विकास की बातें करने व सोचने लगी हैं. स्वच्छता के प्रति भी आज की ग्रामीण महिलाओं का नजरिया बदलने लगा है. परिवार व गांव-समाज को भी स्वच्छता के प्रति सजग कर रही हैं. इन ग्रामीण महिलाओं को प्रोत्साहित व आत्मनिर्भर बनाने में जेएसएलपीएस की अहम भूमिका है. इसके प्रयास से ही महिलाओं का हौसला बढ़ा और आज वो पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर हर क्षेत्र में काम कर रही हैं.

पंचमार्ट दुकान में दीदियों की भागीदारी

पंचमार्ट के उदघाटन के मौके पर मुखिया सोमनाथ मुंडा व दीदियां.

रांची जिले के कांके प्रखंड के चुट्टू गांव की सखी मंडल की सदस्यों ने गांव की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने का बीड़ा उठाया है. समूह की दीदियों ने गांव में राज्य सरकार द्वारा चलायी जा रही पंचमार्ट दुकान को चलाने का निर्णय लिया है. यह निर्णय जेएसएलपीएस के माध्यम से लिया गया. मनरेगा के तहत प्रधानमंत्री आवास, शौचालय, डोभा व सड़क निर्माण आदि में उपयोग होनेवाले सामान जैसे- सीमेंट, बालू, गिट्टी, छड़, ईंट आदि की दुकान का नाम पंचमार्ट रखा गया है. चुट्टू आजीविका महिला ग्राम संगठन की दीदियों ने पंचमार्ट दुकान को गांव में चलाने को लेकर ग्रामसभा का आयोजन किया. इस ग्रामसभा में पंचमार्ट योजना को चलाने संबंधित प्रस्ताव रखा गया, जो सर्वसम्मति से पारित हो गया. 10 फरवरी 2018 को गांव में पंचमार्ट का उदघाटन हुआ. इस अवसर पर चुट्टू पंचायत के मुखिया सोमनाथ मुंडा ने इन दीदियों के हौसले की तारीफ करते हुए कहा कि अब गांव की महिलाएं सरकारी योजनाओं को गांव में लाने में काफी सहायक साबित हो रही हैं. गांव में पंचमार्ट जैसे काम का बीड़ा उठा कर इन महिलाओं ने साबित कर दिया कि अब कोई भी काम मुश्किल नहीं है.

प्रीति लिंडा

प्रखंड कांके
जिला रांची

यह पूरे गांव के लिए गर्व की बात है. चुट्टू आजीविका महिला ग्राम संगठन की सहायिका सुचिता देवी ने कहा कि शुरुआती दौर में पंचमार्ट से सामग्री की बिक्री अपने क्षेत्र में ही की जानी है. अगर मांग बढ़ी तो दूसरी पंचायतों में इसकी बिक्री शुरू की जायेगी. सुचिता देवी ने कहा कि पंचमार्ट की शुरुआत करने के लिए ग्राम संगठन से डेढ़ लाख रुपये ऋण लिये. उन्होंने कहा कि पंचमार्ट शुरू होने के बाद बिक्री अच्छी हो रही है. समूह की सदस्य शशि उरांव कहती हैं कि समूह की पांच दीदियों ने मिल कर इस काम को शुरू किया है. शुरुआती दौर में दीदियों को काफी परेशानी आयी, लेकिन जेएसएलपीएस के सहयोग से समस्या का समाधान हो गया.

अपनी किराना दुकान में समूह की सदस्य सालो देवी

रूबी खातुन

प्रखंड अनगड़ा
जिला रांची

गरीबी से बाहर निकलीं सालो देवी

रांची जिले के अनगड़ा प्रखंड के अनगड़ा कलस्टर से लगभग सात किलोमीटर दूर है सिरका गांव, जहां की सालो देवी आज महिला समूह से जुड़ कर खुद को गरीबी से बाहर निकाल चुकी हैं. सालो देवी वर्ष 2007 में जागृति सखी मंडल से जुड़ीं और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने में जुट गयीं. अभी तक सालो देवी अपने समूह से 90 हजार रुपये तक का लोन ले चुकी हैं. सबसे पहले सालो देवी ने समूह से पांच हजार रुपये का लोन लिया और दो बकरियां खरीदीं. इसकी अच्छी तरह देखभाल करने के कारण बकरियों की संख्या में बढ़ोत्तरी होने लगी. इसकी बिक्री पर अच्छी आमदनी भी हुई. बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने के इरादे से सालो देवी ने समूह से एक बार फिर 10 हजार रुपये का लोन लिया. इससे उन्होंने अपने दो बेटों का नाम प्राइवेट स्कूल में लिखवाया. बच्चों का नामांकन कराने के बाद उन्होंने घर की मरम्मत के लिए पांच हजार रुपये का लोन लिया. इसी बीच उन्होंने व्यवसाय करना चाहा. कुछ समय बाद समूह से 50 हजार रुपये का बड़ा लोन लिया. इस लोन से वह एक किराना दुकान खोलीं. दुकान चलाने में परिवार का पूरा सहयोग भी मिलता है. सालो देवी बताती हैं कि जब वो समूह से नहीं जुड़ी थीं, तब उनकी हालत बेहद खराब थी. वो खुद एक गरीब परिवार की बेटी हैं, जिसके कारण पढ़ाई पूरी नहीं कर पायी थीं. इस बीच शादी हो गयी. ससुराल में भी स्थिति अच्छी नहीं थीं. इन हालातों के बीच सालो देवी हमेशा सोचती थीं कि जिस तरह से उन्होंने गरीबी में जिंदगी गुजारी है, उस तरह की जिंदगी अपने बच्चों को नहीं देंगी. इसके बाद सालो देवी काम करने के लिए घर से बाहर जाने लगीं. बच्चों को घर में छोड़ कर बाहर काम के लिए जाना उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था. काम करने के कारण वो अपने बच्चों को पूरा समय भी नहीं दे पा रही थीं. सालो बताती हैं कि जब वो बच्चों को छोड़ कर काम करने के लिए जाती थीं, तो बच्चे उन्हें देख कर रोने लगते थे. बच्चे बोलते थे कि छोड़कर मत जाओ. बच्चों की जिद देख कर सालो देवी को भी रोना आ जाता था. वो सोचती थीं कि किस तरह से गरीबी के चक्रव्यूह से बाहर निकला जाये और घर के आस-पास काम करके बच्चों को समय दिया जाये. इस दौरान सालो देवी के घर के आस-पास की महिलाओं ने एक समूह बनाने के बारे में सोचा और जागृति सखी मंडल का गठन हुआ. यहां पर सभी महिलाएं बचत करने लगीं, ताकि बचत की राशि समय पर काम आ सके. जागृति महिला समूह को जेएसएलपीएस से जोड़ा गया. जेएसएलपीएस से जुड़ने के बाद सभी महिलाओं को प्रशिक्षण मिला. प्रशिक्षण के दौरान बताया गया कि किस तरह से महिलाएं समूह से जुड़कर गरीबी को मिटा सकती हैं.

इसके अलावा किस तरह से महिलाएं सखी मंडल को और बेहतर बना सकती हैं. जेएसएलपीएस से प्रशिक्षण मिलने के बाद सालो देवी के अंदर आत्मविश्वास आया और उन्हें यह लगने लगा कि वो भी अपने परिवार को गरीबी से बाहर निकाल सकती हैं. समूह से जुड़ने व हर गतिविधियों में सक्रिय रहने के कारण कुछ दिनों के बाद सालो ने समूह से लोन लेकर काम करना शुरू किया और आज उनकी अपनी किराना दुकान है. अब उन्हें काम के लिए घर से बाहर नहीं जाना पड़ता है. घर में बच्चों को पूरा समय भी दे पा रही हैं. दुकान से प्रतिदिन पांच सौ से हजार रुपये तक की आमदनी हो जाती है, इससे परिवार में खुशहाली लौट आयी और सभी खुशहाल जिंदगी जी रहे हैं.

बांस का सामान बना कर मजबूत होतीं दीदियां

बांस से सूप व टोकरी बनातीं समूह की दीदियां.

गिरिडीह जिले के डुमरी प्रखंड से करीब सात किलोमीटर दूर चेगरो गांव में गणेश सखी मंडल की महिलाएं बांस से सूप व टोकरी बना कर आत्मनिर्भर हो गयी हैं. इसका असर यह हुआ कि इन दीदियों की आर्थिक स्थिति तो अच्छी हुई, वहीं अपने बच्चों को शिक्षित भी कर रही हैं. समूह से जुड़ने से पहले चेगरो गांव की महिलाओं के पास कोई रोजगार नहीं था. घर व बच्चों को संभालने में ही व्यस्त रहती थीं. पारिवारिक स्थिति भी अच्छी नहीं थी. इस कारण उन्हें कई परेशानियों का सामना करना पड़ता था.

मुनिया देवी

प्रखंड डुमरी
जिला गिरिडीह

ग्राम संगठन बनाने के उद्देश्य से एसआरपी की टीम गांव में आयी. टीम के सदस्यों ने देखा कि यहां की महिलाओं के पास बांस से सामान बनाने का हुनर है. उन्होंने बांस से रोजगार करने की सलाह दी. महिलाएं राजी हो गयीं और आजीविका बढ़ाने में जुट गयीं. इस काम में पुरुषों का भी साथ मिला. चेगरो गांव से तीन किलोमीटर दूर सेवाटांड़ गांव से बांस खरीदीं और फिर उससे सामान बनाने में महिलाएं जुट गयीं. गणेश समूह की 12 महिला व दो पुरुष सदस्य इस काम में जुट गये. बांस से बने सूप, टोकरी आदि को गांव से नौ किलोमीटर दूर इसरी बाजार में बेचते थे. इस बिक्री से जो मुनाफा होता था, उसे आपस में बांट लेते थे. इस तरह समूह से जुड़ने के बाद यहां की महिलाओं की आजीविका में सुधार होने लगा.

गणेश स्वयं सहायता समूह की अध्यक्ष ललिता देवी कहती हैं कि समूह से जुड़ने के बाद गांव की महिलाओं में काफी आत्मविश्वास बढ़ा है. बांस का सामान बना कर बेचने से महिलाओं को घर बैठे ही रोजगार मिल गया और आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ. समूह की सदस्य गुड़िया देवी कहती हैं कि सूप, टोकरी के अलावा बांस से और कई आकर्षक सामान बनाये जा सकते हैं, हालांकि इसके लिए प्रशिक्षण की जरूरत है, जो हमें अभी तक नहीं मिला है. कहती हैं कि सूप व टोकरी की मांग छठ पर्व में सबसे अधिक होती है. शादी-विवाह के समय इसकी मांग अधिक रहती है.

आजीविका से माधुरी की बदली जिंदगी

वीणा देवी

प्रखंड : मनोहरपुर
जिला : पश्चिमी सिंहभूम

पश्चिमी सिंहभूम जिले के मनोहरपुर प्रखंड के ढीपा गांव की माधुरी देवी की जिंदगी में बदलाव आजीविका से जुड़ने के बाद आया. श्रीविधि तकनीक के सहारे खेती करने पर माधुरी के खेतों में पैदावार अधिक हुई, जिससे अच्छी आमदनी भी हुई. अच्छी आमदनी होने से जीवनस्तर में सुधार आया. माधुरी देवी की स्थिति पहले बहुत खराब थी. पति सुरेश महतो के बेरोजगार होने से माधुरी के सामने बहुत बड़ी समस्या आ गयी थी. गुजर-बसर करना मुश्किल हो गया था. इसी बीच स्वयं सहायता समूह के बारे में उन्हें जानकारी मिली और वर्ष 2014 में सीता स्वयं सहायता समूह से जुड़ गयीं. खेती-बारी में खास दिलचस्पी रखनेवाली माधुरी को समूह ने आजीविक कृषि मित्र की जिम्मेदारी सौंपी. माधुरी ने श्रीविधि तकनीक के आधार पर 20 डिसमिल खेतों में धान की बुआई की. श्रीविधि तकनीक से खेती होने के कारण धान की उपज भी अच्छी हुई. माधुरी ने उसे मनोहरपुर में बेचा, उससे अच्छी आमदनी हुई. इसका असर यह हुआ कि आज माधुरी अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देने में सक्षम हो गयी हैं.

आदिवासी महाकुंभ मेला संपन्न

शबनम खातून

प्रखंड बरवाडीह
जिला लातेहार

पलामू जिले के दुबियाखाड़ में आयोजित राजा मेदिनीराय आदिवासी महाकुंभ विकास मेला संपन्न हो गया. इस दौरान मेले को राज्यस्तरीय मेला बनाने की मांग रखने की बात कही गयी. मेला के दौरान सखी मंडल की महिलाओं के बीच 189 पावर टीलर का वितरण किया गया. इस दौरान आदिवासी समाज के लोगों को साड़ी, धोती व शॉल देकर सम्मानित किया गया. मेला के आयोजक पलामू जिला परिषद के उपाध्यक्ष संजय सिंह ने आदिवासी महाकुंभ मेला को संबोधित करते हुए राजा मेदिनीराय आदिवासी महाकुंभ विकास मेले को राज्यस्तरीय मेले का दर्जा देने की मांग की है. उन्होंने कहा कि अगर इस मेले को राज्यस्तरीय मेले का दर्जा मिल जायेगा, तो इससे इलाके के आदिवासियों को साल में एक बार एक जगह पर जमा होने का एक बेहतर मौका मिलेगा और उन्हें सरकार द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी भी मिल जायेगी. उन्होंने कहा कि राजा मेदिनीराय के बताये रास्ते पर चलने से ही आदिवासी समाज का कल्याण होगा. संजय सिंह ने कहा कि राजा मेदिनीराय के शासनकाल में लोगों को रोजगार देने के लिए दुधारू पशुओं की व्यवस्था थी. आज के युवा अपने रास्ते से भटकने लगे हैं. उन्होंने कहा कि मेले की कमियों को दूर करके मेले को और भी बेहतर ढंग से आयोजित करने का प्रयास किया जायेगा. इसमें सभी की भागीदारी की जरूरत है.

स्वच्छता को लेकर ग्रामीणों को जागरूक करतीं महिलाएं

आशा तिग्गा

प्रखंड मनोहरपुर
जिला पश्चिमी सिंहभूम

पश्चिमी सिंहभूम जिले के मनोहरपुर प्रखंड क्षेत्र में एक दिवसीय स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन हुआ. इस अवसर पर काफी संख्या में सखी मंडल की दीदियां उपस्थित थीं. कार्यक्रम की शुरुआत में उपस्थित लोगों ने स्वच्छता की शपथ ली. प्रखंड परिसर से मनोहरपुर रेलवे स्टेशन तक साफ-सफाई की गयी. जागरूकता कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रखंड कल्याण पदाधिकारी राजेंद्र बाड़ा ने विस्तार से स्वच्छता संबंधित जानकारी दी. ग्रामीणों को स्वच्छता के प्रति सजग रहने को कहा. उन्होंने कहा कि हर घर में शौचालय और उसका समुचित उपयोग जरूरी है. इसके अलावा साफ-सफाई पर भी विशेष जोर देने की जरूरत है. इस दौरान सखी मंडल की दीदियों ने अपने अनुभव भी साझा किये. घर में शौचालय होने के फायदे की जानकारी दी. दीदियों ने कहा कि पहले शौचालय के लिए खासकर महिलाओं को घर से बाहर जाना पड़ता था, जिससे काफी परेशानी होती थी. जब से घर में शौचालय की व्यवस्था हुई है, तब से उसका समुचित उपयोग हो रहा है. इससे दोहरा लाभ भी ग्रामीणों को मिल रहा है. एक तो खुले में शौच से गांव को मुक्ति मिली है, वहीं दूसरी ओर महिलाओं को परेशानी से निजात मिली है. कुछ दीदियों ने अपनी पीड़ा भी बतायी. इन दीदियों ने कहा कि जिस तरह से सरकार शौचालय की व्यवस्था घर-घर की है, उसी तरह पानी की भी व्यवस्था करे, क्योंकि कई ऐसे गांव आज भी हैं, जहां पानी की काफी समस्या है. इसी बीच कुछ दीदियों ने इस समस्या का समाधान भी अन्य दीदियों को बताया. उन्होंने कहा कि जिस तरह पीने व अन्य कार्य के लिए पानी चापाकल या कुएं से लाते हैं, वैसे ही शौचालय के लिए भी पानी ले आयें. समस्या खुद ब खुद खत्म हो जायेगी. इस अवसर पर सुझाव देनेवाली दीदियों के बीच स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए बाल्टी, जग व झाड़ू का वितरण किया गया. कार्यक्रम को सफल बनाने में एसएलपीएस के बीपीएम, बीसीसी, पेयजल व स्वच्छता विभाग, टीएसआरडीएस व विभिन्न पंचायतों के पंचायत प्रतिनिधियों ने अहम भूमिका निभाई.

चिंता देवी के बुलंद हौसले ने गरीबी को दी मात

नेहा कुमारी

प्रखंड बरवाडीह
जिला लातेहार

लातेहार जिले के कुरा गांव की चिंता देवी अपने जज्बे से गरीबी को मात देकर परिवार में खुशियां लायीं. परिवार के चेहरे पर खुशियां लाने में महिला समूह का महत्वपूर्ण योगदान रहा. चिंता देवी कहती हैं कि पहले आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी. पति मजदूरी करते थे, लेकिन पूरे परिवार का खर्च चलाना बहुत मुश्किल था. गांव में वर्ष 2015 में आजीविका स्वयं सहायता समूह का गठन हुआ. चिंता देवी भी समूह से जुड़ीं. कुछ दिनों के बाद वह समूह से छोटा लोन लेकर अपनी कुछ जरूरतें पूरा कीं. उन्होंने समय पर लोन चुकता भी कर दिया. इसके बाद व्यवसाय शुरू करने के लिए समूह से 40 हजार रुपये का लोन लिया. अपने पास बचे 20 हजार और समूह से लोन लिए 40 हजार रुपये को मिला कर घर से बिजनेस शुरू किया. घर, आंगन, बाथरूम को साफ करनेवाले हाइड्रोक्लिनर एसिड घर में ही बना कर बेचने लगीं. धीरे-धीरे व्यापार बढ़ा और चिंता देवी ने घर में एक छोटी मशीन लगायी. इस मशीन में 500 लीटर पानी, एक किलोग्राम कास्टिक सोडा और तीन किलोग्राम हाइड्रोक्लिनर मिला कर एसिड तैयार किया जाने लगा. यह क्लिनर आंगन में जमे काई आदि को साफ करता है. इस एसिड के व्यापार से चिंता की आमदनी अच्छी होने लगी. अच्छी आमदनी होने के कारण समूह से लिये लोन को चुकता भी कर दिया. इससे परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी हो गयी.